मसीह धारणाएँ

उत्तर कुंजी

shepherds
GLOBAL CLASSROOM

पाठ 1
परमेश्वर की पुस्तक

(1) सामान्य प्रकाशन क्या है?

सामान्य प्रकाशन वह है जो परमेश्वर ने हमें अपनी सृष्टि के माध्यम से स्वयं के बारे में दिखाया है।

(2) परमेश्वर ने किन दो रूपों में खास प्रकाशन दिया है?

- प्रेरित पवित्रशास्त्र
- यीशु, उसका पुत्र

(3) विशेष प्रकाशन कौन से तीन काम करता है जो सामान्य प्रकाशन नहीं कर सकता है?

- यह परमेश्वर का वर्णन करता है।
- पतन और पाप की स्पष्ट करता है।
- यह परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप करने का मार्ग दिखाता है।

(4) बाइबल अपने बारे में क्या दावा करती है?

यह परमेश्वर का वचन है।

(5) छः कारणों की सूची बनाइए कि हम जानते हैं कि बाइबल परमेश्वर का वचन है।

- बाइबल के हजारों तथ्यों की पुष्टि की जाती है।
- बाइबल का कोई भी कथन अप्रमाणित नहीं है।
- बाइबल स्वयं का खंडन नहीं करती है।
- सुसमाचार इसके प्रभावों से साबित होता है।
- परमेश्वर का आत्मा बाइबल के द्वारा बोलता है।
- बाइबल परमेश्वर के साथ हमारे संबंध का मार्गदर्शन करती है।

(6) बाइबल क्यों उपदेश, फटकार, सुधार और धार्मिकता की अभ्यास के लिए लाभदायक है? (2 तीमुथियुस 3:16)।

क्योंकि यह परमेश्वर से प्रेरित है।

(7) बाइबल ऐसी कौन-सी प्रेरणा देती है जो हमें यकीन दिलाती है कि लेखकों को गलतियाँ करने से रोका गया था?

वे पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर थे (2 पतरस 1:21)।

(8) परमेश्वर ने प्रेरणा के चार तरीकों की सूची बनाइए।

- सुनाई देने वाली आवाज
- सपने
- दर्शन
- बोलकर लिखाना

(9) बाइबल की प्रेरणा से इसका क्या मतलब है?

यह पूरी तरह से परमेश्वर का वचन है, यहाँ तक कि इसमें इस्तेमाल किए गए शब्द भी।

(10) बाइबल के अचूक होने का क्या मतलब है?

- यह कभी असफल नहीं हो सकती।
- इस पर भरोसा किया जा सकता है।
- यह हमें कभी गुमराह नहीं करेगी।

(11) बाइबल की त्रुटिहीन होने का क्या मतलब है?

यह हर कथन में सही है जो यह करती है।

पाठ 2
परमेश्वर के गुण

(1) किसी व्यक्ति की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता क्या है?

परमेश्वर की उसकी अवधारणा

(2) शास्त्र का पहला पाठ क्या है?

परमेश्वर उन सभी का सृष्टिकर्ता है जो अस्तित्व में हैं।

(3) परमेश्वर के उस गुण का नाम बताइए जो प्रत्येक कथन से मेल खाता हो:

- हम वर्णन नहीं कर सकते कि परमेश्वर कैसा दिखता है: *आत्मा*
- परमेश्वर हमेशा से अस्तित्व में है: *शाश्वत*
- परमेश्वर के पास बुद्धि, भावनाएँ और इच्छा है: *व्यक्तिगत*
- परमेश्वर हमेशा एक सा ही है: *अपरिवर्तनीय*
- परमेश्वर जो चाहे कर सकता है: *सर्वशक्तिमान*
- परमेश्वर सब कुछ देखता है: *हर जगह मौजूद है*
- परमेश्वर ने अपने पुत्र को इसलिए भेजा ताकि हम पर दया हो: *प्रेम*
- परमेश्वर के स्वभाव में तीन व्यक्ति हैं: *त्रियक्ता*
- परमेश्वर में पूर्ण नैतिक पूर्णता है: *पवित्र*
- परमेश्वर कभी कुछ नहीं सीखता: *सब जानता है*
- परमेश्वर के कार्य हमेशा निष्पक्ष और न्यायपूर्ण होते हैं: धर्मी

पाठ 3
त्रियक्ता

(1) ब्रह्मांड परमेश्वर के स्वरूप को कैसे स्पष्ट करता है?

ब्रह्मांड के तीन पहलू हैं - स्थान, समय और पदार्थ।

(2) त्रियक्ता के सिद्धांत की नींव बाइबिल के कौन से तीन आधार हैं?

- परमेश्वर केवल एक ही है।
- पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा सभी परमेश्वर हैं।
- ये तीनों एक-दूसरे से भिन्न व्यक्तियों के रूप में संबंधित हैं।

(3) त्रियक्ता के भीतर रिश्तों की रचना क्या है?

पिता प्रदान है, फिर पुत्र, फिर पवित्र आत्मा।

(4) एक परिवार या कलिसिया की रचना त्रियक्ता की रचना से कैसे तुलना योग्य है?

एक परिवार या कलिसिया के सभी सदस्यों का मूल्य समान है, लेकिन सभी के पास अधिकार की समान स्थिति नहीं है।

(5) त्रित्ववादियों के रूप में, हमें किससे प्रार्थना करनी चाहिए?

- पिता से, आत्मा में, पुत्र के माध्यम से
- पिता, पुत्र और आत्मा के लिए

(6) त्रियक्ता के बारे में तीन सामान्य गलत सिद्धांतों के नाम बताइए।

- परमेश्वर वास्तव में एक ही व्यक्ति है जिसने विभिन्न भूमिकाएँ निभाई हैं।
- पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा अलग-अलग जीव हैं।
- त्रियक्ता का एक व्यक्ति दूसरे से कम है।

पाठ 4

मानवता

(1) उत्पत्ति 1:26-27 के मुताबिक लोग बाकी सृष्टि से कैसे अनोखी हैं?

वे परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए हैं।

(2) उन तीन कारणों के नाम बताइए जिन्हें हम जानते हैं कि मनुष्य में परमेश्वर का स्वरूप भौतिक समानता नहीं है।

- परमेश्वर आत्मा है।
- परमेश्वर को एक व्यक्ति के समान दिखाना मूर्तिपूजा है।
- लोग शारीरिक रूप से पृथ्वी पर जीवन के लिए बनाये गये हैं।

(3) मानवता में परमेश्वर के स्वरूप के सात तत्वों की सूची बनाइए। (कोई सात)

- रचनात्मक वृत्ति
- सोचने की क्षमता
- संवाद करने की क्षमता
- सामाजिक स्वभाव
- नैतिक भावना
- चुनाव करने की क्षमता
- अमरता
- प्यार करने की क्षमता
- आराधना करने की क्षमता

(4) किन दो कारणों से हम परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए हैं?

- परमेश्वर के साथ संबंध बनाने के लिए
- परमेश्वर की आराधना करने के लिए

(5) नैतिक भावना से क्या क्षमता आती है?

सही और गलत की अवधारणाओं को समझने की क्षमता

(6) लोगों में वास्तविक चुनाव करने की काबिलियत रखने का क्या महत्व है? (दोनों में से कोई एक)

- हम परमेश्वर के प्रति उत्तरदाय हैं।
- हम पश्चाताप कर सकते हैं और सुसमाचार पर विश्वास कर सकते हैं।

पाठ 5

पाप

(1) तीन कारण बताइए कि हमें पाप को क्यों समझना चाहिए।

- संसार की स्थिति को समझने के लिए।
- अनुग्रह और उद्धार को समझने के लिए।
- पवित्रता को समझना।

(2) हम कैसे जानते हैं कि पाप परमेश्वर का दोष नहीं था?

परमेश्वर ने हर चीज़ को बिना किसी दोष के पूर्ण बनाया है।

(3) निम्नलिखित में से प्रत्येक की एक-वाक्य परिभाषा दें: जानबूझकर किया गया पाप, विरासत में मिली भ्रष्टता, और अनजाने में किए गए उल्लंघन।

जानबूझकर किया गया पाप परमेश्वर के जाना हुआ इच्छा का उद्देश्यपूर्ण उल्लंघन है।

विरासत में मिली भ्रष्टता मनुष्य के नैतिक स्वभाव की भ्रष्टता है, जो उसे जन्म से ही पाप की ओर ले जाती है।

अनजाने में किया गया उल्लंघन ऐसे कार्य हैं, जो अचानक या अज्ञानता के द्वारा परमेश्वर के वचन का उल्लंघन करते हैं।

(4) हमें परमेश्वर की इच्छा को बेहतर ढंग से समझने और उसे पूरा करने की इच्छा क्यों करनी चाहिए?

- हम ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहते जिससे परमेश्वर अप्रसन्न हो।
- गलत काम करने के बुरे परिणाम होते हैं, भले ही वह अनजाने में ही क्यों न हो।
- हमें मसीहीयों के रूप में अच्छे उदाहरण बनने की जरूरत है।
- यदि हम परमेश्वर की इच्छा से बचने का प्रयास करते हैं, तो हम जानबूझकर किए गए पाप के दोषी हैं।

पाठ 6

आत्माओं

(1) हम कैसे जानते हैं कि स्वर्गदूतों के पास आम तौर पर भौतिक शरीर नहीं होते हैं?

स्वर्गदूत आत्माएँ हैं ।

(2) स्वर्गदूतों की सृष्टि कब की गई थी?

पृथ्वी के निर्माण से कुछ समय पहले

(3) क्या स्वर्गदूत मरते हैं?

स्वर्गदूतों कभी नहीं मरते

(4) चार तरीकों के नाम बताइए, जिन्हें हम जानते हैं कि स्वर्गदूतों का व्यक्तित्व होता है।

- वे बोलते हैं और बातचीत करते हैं।
- वे परमेश्वर की आराधना करते है।
- उनमें भावनाएँ हैं।
- उनके पास बौद्धिक क्षमता है।

(5) बाइबल में स्वर्गदूतों को संदर्भित करने के लिए इस्तेमाल किए गए चार शब्दों के नाम लिखिए।

- करूबों
- साराप
- महादूत
- आत्माएँ

(6) स्वर्गदूत परमेश्वर की सेवा करनेवालों के लिए क्या करते हैं?

वे उन्हें घेर लेते हैं और उनकी रक्षा करते हैं।

(7) दुष्ट आत्माओं की उत्पत्ति क्या है?

वे देवदूत हैं जिन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध विरोध किया।

(8) जो मुर्हति पूजा कर था है वो सच मे किसे आराधना कर रहे हैं?

दुष्टात्माएँ/बुरी आत्माओं

(9) शैतान और दूसरी बुरी आत्माओं की आखिरी नियति क्या है?

आग की झील

(10) आत्मिक हमलों से खुद को बचाने के लिए विश्वासियों को क्या करना चाहिए?

आत्मिक हथियार पहनें (इफिसियों 6:13) ।

पाठ 7
मसीह

(1) मसीहा की प्राथमिकता क्या थी?

अपने लोगों को पाप से छुड़ाना

(2) आरम्भिक कलीसिया का क्या अर्थ था जब उन्होंने "यीशु प्रभु है" कहा?

वह सभी का प्रभु, ब्रह्मांड का निर्माता और परमेश्वर है।

(3) यीशु कैसे विशिष्ट तौर पर परमेश्वर का पुत्र है?

वह एकमात्र ऐसा जीव है जो पूरी तरह से पिता के स्वभाव को साझा करता है।

(4) देहधारण क्या है?

परमेश्वर मानव शरीर धारण करना, मनुष्य बनना।

(5) यीशु का एक मनुष्य होना महत्वपूर्ण होने के तीन कारणों की सूची बनाइए।

- वह बलिदान के रूप में पीड़ित हो सकता है और मर सकता है
- उसकी धार्मिकता हमें धर्मी बना सकती है और हमें जीवन दे सकती है।
- वह हमारा याजक हो सकता है जो हमें परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है।

(6) तीन कारणों की सूची बनाइए कि हमारे लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि यीशु ही परमेश्वर है।

- उसकी बलिदान से भरी हुई मृत्यु असीमित मूल्य की है
- उसके पास हमें बचाने की सामर्थ्य है
- हमें उसकी आराधना वैसे ही करनी चाहिए जैसे हम पिता की आराधना करते हैं

(7) किन दो कारणों से बलिदान की आवश्यक था?

- ताकि परमेश्वर हमें क्षमा कर सके और फिर भी न्यायी और पवित्र हो सके।
- यह दिखाने के लिए कि पाप बहुत गम्भीर है

(8) यीशु किसी अन्य तरीके की बजाय सलीब पर क्यों मरा?

इससे पता चलता है कि उसने परमेश्वर का श्राप अपने ऊपर ले लिया था।

(9) यीशु के शारीरिक पुनरुत्थान के तीन सार्थक कारणों की सूची बनाइए।

- यह पाप और मृत्यु पर उसकी पूर्ण विजय को प्रदर्शित किया।
- यह प्रमाणित कर दिया कि वह वही था जिसका उसने दावा किया था
- यह हमें आश्वासन देता है कि हम भी मरे हुओं में से जी उठेंगे।

पाठ 8

उद्धार

(1) क्यों सलीब कई लोगों के लिए अपराध है।

क्योंकि सलीब इसका अर्थ है कि वे पापी हैं जिन्हें क्षमा की आवश्यकता है।

(2) चार बातों की सूची बनाइए जो प्रत्येक पश्चाताप न करने वाले पापी के बारे में सत्य हैं।

- वह पाप के कई कामों का दोषी है।
- वह परमेश्वर का शत्रु है।
- वह अपनी इच्छाओं में भ्रष्ट है।
- वह अपनी स्थिति को बदलने के लिए शक्तिहीन है।

(3) प्रायश्चित के बिना क्षमा परमेश्वर का अपमान क्यों करेगी?

यह उसे अन्यायी और अपवित्र लगेगा।

(4) किन दो तरीकों से यीशु विशिष्ट रूप से बलिदान के योग्य हुआ?

- वह पापरहित था।
- वह परमेश्वर और मनुष्य दोनों था।

(5) पश्चाताप करनेवाले पापी का दृष्टिकोण क्या होता है?

- वह स्वयं को दोषी और दण्ड के योग्य देखता है।
- वह अपने पापों से दूर होने को तैयार है।

(6) यदि एक व्यक्ति के पास बचाने वाला विश्वास है, तो वह किस बात पर विश्वास करता है?

- वह खुद को सही ठहराने के लिए कुछ नहीं कर सकता।
- मसीह का बलिदान उसकी क्षमा के लिए पर्याप्त है।
- यीशु पाप और मृत्यु पर विजय प्राप्त करते हुए मृतकों में से जी उठा।
- परमेश्वर उसे केवल विश्वास की शर्त पर क्षमा करता है।

(7) कोई व्यक्ति कैसे निश्चित रूप से जान सकता है कि वह बचा लिया गया है?

- वास्तव में पश्चाताप करता है,
- पवित्रशास्त्र में दी हुई परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर भरोसा करता है
- आत्मा की गवाही को प्राप्त करता है

पाठ 9

उद्धार के मुद्दे

(1) 1 यूहन्ना के मुख्य विषयों में से एक क्या है?

उद्धार का व्यक्तिगत आश्वासन

(2) 1 यूहन्ना एक विश्वासी की किस विशेषता पर सबसे ज़्यादा ज़ोर देता है?

पाप पर विजय

(3) 1 कुरिन्थियों 10:13 से हम कौन-सी चार बातें जानते हैं?

- परीक्षा हमारी मानवता के कारण आता है।
- परमेश्वर हमारी सीमा जानता है।
- परमेश्वर हमारे पास आने वाले परीक्षाओं को सीमित करता है।
- परमेश्वर प्रदान करता है जो हमें विजय के लिए क्या चाहिए।

(4) एक विश्वासी कैसे मसीह में बने रहना जारी रखता है?

मसीह की आज्ञाओं का पालन करके

(5) हम मसीह के साथ बचाने का संबंध कैसे बनाए रख सकते हैं?

परमेश्वर के ऊपर भरोसा करने और उसकी आज्ञा का पालन करने

पाठ 10
पवित्र आत्मा

(1) पवित्र आत्मा के प्रति आरम्भिक कलीसिया की प्रतिक्रिया की तीन विशेषताएं की सूची बनाइए।

- उन्होंने पवित्र आत्मा को उसके ईश्वरत्व में सम्मानित किया।
- वे पवित्र आत्मा की उपस्थिति, मार्गदर्शन और गतिविधि के प्रति सचेत थे।
- उन्होंने पवित्र आत्मा पर अपनी निर्भरता और उसे जवाब देने की अपनी जिम्मेदारी का एहसास किया।

(2) हम कैसे जानते हैं कि पवित्र आत्मा एक व्यक्ति है?

उसके पास मन, इच्छा और भावनाएँ हैं।

(3) पाँच तरीकों की सूची बनाइए, जिनसे हम जानते हैं कि पवित्र आत्मा परमेश्वर है।

- वह सब कुछ जानता है।
- वह हर जगह मौजूद है।
- उसके पास सारी सामर्थ्य है।
- उसकी निन्दा की जा सकती है।
- वह शाश्वत है।

(4) पवित्र आत्मा की नौ गतिविधियों की सूची बनाइए। (कोई भी नौ)

- वह पाप का दोषी ठहराता है
- वह पुनर्जीवित करता है, उस व्यक्ति को जीवन देता है जो पाप में मरा हुआ था
- वह विश्वासी को व्यक्तिगत् आश्वासन देता है कि वह बचा लिया गया है
- वह प्रत्येक विश्वासी में वास करता है
- वह परमेश्वर के सत्य की समझ देता है
- वह लोगों को विशेष सेवकाई के लिए बुलाता है और सेवकाई में निर्णयों का मार्गदर्शन करता है
- वह विश्वासी को पवित्र करता है, उसे पवित्र बनाने के लिए उसके हृदय को शुद्ध करता है
- वह पाप पर विजय पाने के लिए जीवन यापन करने की सामर्थ्य देता है
- वह विश्वासी के जीवन में आत्मिक फल उत्पन्न करता है
- वह सेवकाई के लिए वरदान देता है
- वह सेवकाई के लिए सामर्थ्य का विशेष अभिषेक देता है।
- वह विश्वासियों को परमेश्वर की इच्छा के अनुसार प्रार्थना करने में सहायता प्रदान करता है।
- वह कलीसिया की एकता और संगति को बनाता है।

(5) हमारे जीवन में अपने कार्य के लिए पवित्र आत्मा की सर्वोच्च प्राथमिकता क्या है?

हमें पाप पर विजय दिलाना और हमारे हृदयों को शुद्ध करना है

पाठ 11
मसीही पवित्रता

(1) पवित्र का मूल अर्थ क्या है?

अलग होने का अर्थ है, एक उद्देश्य के लिए समर्पित।

(2) परमेश्वर के पवित्र होने का क्या अर्थ है?

पवित्रता का अर्थ है कि परमेश्वर अपने ईश्वरीय व्यक्ति और पद के लिए पापी, अशुद्ध, सामान्य, साधारण या अनुचित किसी भी चीज़ से पूरी तरह से अलग है।

(3) आराधना करने के लिए पवित्रता क्यों महत्वपूर्ण है?

- हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसके जैसा बनना चाहते हैं।
- हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसे प्रसन्न करना चाहते हैं।

(4) मसीही पवित्रता कब आरम्भ होती है?

कब एक व्यक्ति बचाया जाता है।

(5) ज्योति में चलने का क्या अर्थ है?

परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते रहना है, क्योंकि हम उसके सत्य के बारे में अधिक सीखते हैं

(6) पवित्रीकरण की आजीवन प्रक्रिया के दौरान एक विश्वासी के साथ क्या होता है?

एक विश्वासी पाप और संसार से तेजी से अलग होने और तेजी से परमेश्वर के प्रति समर्पित होने की एक आजीवन प्रक्रिया है।

(7) विरासत में मिली भ्रष्टता क्या है?

एक व्यक्ति के नैतिक स्वभाव की भ्रष्टता है, जो उसे जन्म से ही पाप की ओर ले जाती है।

(8) प्रभु के लौटने पर एक विश्वासी शरीर, जीव और आत्मा से निर्दोष कैसे हो सकता है?

पूरी तरह से पवित्र किया जाएगा।

पाठ 12
कलीसिया

(1) कलीसिया का युग कब प्रारंभ हुआ?

पिन्तेकुस्त के दिन

(2) कलीसिया को प्रेरितिक क्यों कहा जा सकता है?

क्योंकि प्रेरितों की शिक्षाएँ कलीसिया के मूलभूत सिद्धांतों हैं

(3) कलीसिया की उत्पत्ति के चार पहलू क्या हैं?

- यीशु की सेवकाई
- मसीह द्वारा प्रदान किया गया उद्धार
- पिन्तेकुस्त के दिन हुई घटना
- प्रेरितों सिद्धांत का विकास

(4) विश्वव्यापी कलीसिया कौन है?

सभी समयों और स्थानों के सभी विश्वासी

(5) स्थानीय कलीसिया क्या है?

एक स्थान पर विश्वासियों का एक समुदाय है जो एक साथ मिलकर मसीह की देह का कार्य करते हैं।

(6) कैथोलिक कलीसिया शब्द का मूल रूप से क्या अर्थ था?

विश्वव्यापी कलीसिया, या सार्वभौमिक कलीसिया जिसमें सभी मसीही शामिल हैं

(7) विश्वव्यापी कलीसिया किन दो बातों से एकजुट है?

- प्रेरितों के सिद्धांतों
- मसीह के साथ एक परिवर्तनकारी संबंध

(8) एक कलीसिया के लिए यह क्यों अच्छा है कि वह उन सिद्धांतों का लिखित कथन दे जो वे साझा करते हैं?

यह दिखाता है कि कौन से सिद्धांत विश्वासियों के उस समूह को घनिष्ठ और नियमित आराधना और सेवकाई के लिए एकजुट करते हैं।

(9) स्थानीय कलीसिया के छः उद्देश्यों की सूची बनाइए। (कोई भी छह)

- सुसमाचार प्रचार
- मंडली के तौर पर आराधना कीजिए
- सिद्धांत बनाए रखें
- दास की आर्थिक मदद करें
- प्रचारक को भेजें और उनका समर्थन करें
- आवश्यकता में पड़े हुए सदस्यों की सहायता करें
- पाप में फंसने वाले सदस्यों को अनुशासन दीजिए
- बपतिस्मा और प्रभु भोज का अभ्यास करें
- विश्वासियों को परिपक्वता तक शिष्य बनाना
- समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा करें

पाठ 13
अनन्त नियति

(1) स्वर्ग की प्राथमिक गतिविधि क्या है?

आराधना

(2) ऐसी चार चीजों की सूची बनाएं जो स्वर्ग में नहीं होंगी। (कोई भी चार)

- पाप
- दुःख
- दुख
- संघर्ष
- खतरा
- बीमारी
- बुढ़ापा
- मृत्यु

(3) स्वर्ग में कौन जाएगा?

जो पाप से पश्चाताप करते हैं और यीशु मसीह में उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में विश्वास करते हैं।

(4) विश्वासी स्वर्ग में कब जाते हैं?

मृत्यु के समय या यीशु के आगमन के समय

(5) यीशु का क्या मतलब था कि एक व्यक्ति अपना हाथ काट ले? (मत्ती 5:30)

किसी भी गतिविधि को रोकना जो हमें पाप और नरक की ओर ले जाएगी।

(6) बाइबल हमें नरक के बारे में कौन-सी तीन बातें बताती है?

- यह शाश्वत है।
- यह अपरिवर्तनीय है
- यह पीड़ादायक है।

(7) नरक के शाश्वत होने के तीन कारण बताइए।

- पाप एक असीमित परमेश्वर के विरुद्ध अपराध है।
- पश्चाताप न करने वाले पापी परमेश्वर को उस अनन्त सेवा से इनकार करते हैं जो उनके लिए है।
- हम अनन्त जीव हैं और यदि हम परमेश्वर से अलग होने का चुनाव करते हैं तो जाने के लिए कोई अन्य स्थान नहीं है।

पाठ 14
अंतिम घटनाओं

(1) बाइबल की भविष्यवाणियों में आखिरी घटनाओं के बारे में चार ज़रूरी सच्चाइयाँ क्या हैं?

- यीशु की शारीरिक वापसी
- सभी लोगों का शारीरिक पुनरुत्थान
- न्याय
- परमेश्वर का अनंत राज्य

(2) यीशु के लौटने पर मसीहियों का क्या होगा?

- जो मसीही विश्वासी मर चुके हैं, वे पुनरुत्थान हो उठेंगे।
- सभी मसीहि प्रभु से मिलने के लिए उठेंगे

(3) हमें यीशु के आने का इंतज़ार कैसे करना चाहिए?

- शाश्वत प्राथमिकताओं को बनाए रखना
- पवित्रता में रहना
- प्रार्थना द्वारा आत्मिक रूप से अपनी रक्षा करना

(4) पुनरुत्थान का सिद्धांत क्यों आवश्यक है?

- यीशु मरे हुओं में से जी उठे।
- सभी लोगों को उठाया जाएगा।
- देह का शाश्वत मूल्य है।
- सुसमाचार सत्य है।

(5) हमें कौन सी चार बातें समझने के लिए न्याय के बारे में जानना चाहिए?

- पाप का महत्व
- परमेश्वर के प्रति हमारी जवाबदेही
- हमारे विकल्पों का महत्व
- सभी पापों का अंत

पाठ 15
प्राचीन पंथ

(1) पंथ क्या है?

आवश्यक मसीही विश्वासों का सारांश है।

(2) यीशु के बारे में पहले दो सिद्धांतीय कथनों के नाम बताइए।

- यीशु ही प्रभु है
- प्रभु यीशु मसीह

(3) पवित्रशास्त्र में पहले पंथ का संदर्भ क्या है जो कई कथनों देता है?

1 तीर्थयात्री 3:16

(4) प्रेरितों के पंथ का मकसद क्या था?

प्रेरितों के सिद्धान्तों को व्यक्त करने के लिए।

(5) निसीन पंथ का उद्देश्य क्या था?

मसीह और पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व के सिद्धांतों की रक्षा करना था।

(6) चाल्सीडोनियन पंथ का उद्देश्य क्या था?

मसीह के देहधारण के सिद्धांतों की रक्षा करना था।